www.thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853114
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13 विक्रम संवत् 2070
दयानन्दाब्द 190

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com (दूरभाष : 01262-216222) सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 10 अंक : 18 रोहतक, 7 अक्तूबर, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

ईश्वर कभी अपने नियमों का उल्लंघन नहीं करता

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला (हरयाणा)

मंगलवार, 5 मार्च, 2002 को दैनिक भास्कर में प्रो० वेदप्रकाश मल्होत्रा जी का लेख पढ़कर अत्यन्त दुःख हुआ और आश्चर्य भी, जिसमें लिखा गया कि भक्तों के लिए अपने नियम भी दांव पर लगा देते हैं भगवान्। ईश्वर अपने अनन्य प्यारे भक्तों के गुलाम होकर खुद अपने बनाये नियमों का उल्लंघन कर देते हैं। भक्त के आगे भगवान् प्रेमवश असहाय हो जाते हैं और अपना नियम वचन भले ही टल जाय पर भक्त का वचन नहीं टलने देते। मैं तो यह कहूँगा कि प्रोफेसर साहब ने कभी गीता को पढ़ा ही नहीं और जो कुछ लिखा है उन्होंने सुनी-सुनाई बातें ही बिना सोचे-विचारे लिख डाली। अगर गीता उन्होंने वास्तव में पढ़ी होती तो ऐसा शायद न लिखते क्योंकि जो बातें उन्होंने लिखी हैं वह श्रीकृष्ण योगेश्वर महाराज की मान्यताओं के विरुद्ध हैं। न मालूम क्या हो गया है देश की शिक्षित वर्ग को जो अपनी बुद्धि से काम ही नहीं लेते हैं। बिना विचारे काल्पनिक कथाओं को सुनकर उन पर ही आरूढ़ हैं। जो लिखा है अगर पहले ऐसे होता था तो अब क्यों नहीं होता? परमात्मा इतना कमजोर है कि वह भक्तों का गुलाम बन जाता है। गुलामों से तो अभद्र व्यवहार अक्सर लोग करते हैं फिर भक्त परमात्मा के साथ भी ऐसा ही करते होंगे। गुलाम से तो कोई घर में झाड़ू लगवायेगा, कोई कपड़े धुलवायेगा, कोई खाना पकवायेगा और जो उसके जी में आयेगा वह काम करवायेगा। प्रो० साहब को ऐसी बातें लिखने से पहले इसके ऊपर विचारना चाहिए था।

परमात्मा तो सर्वशक्तिमान् है, उसकी शक्ति अपार है, ईश्वर का किसी ने पार नहीं पाया। ईश्वर सब सामर्थ्ययुक्त है, वह अपने कार्यों में किसी की मदद नहीं लेता। परमात्मा ने कोई पीर, पैगम्बर, गुमाश्ते आदि नहीं रखे हुए। वह सृष्टि का संचालन कर्त्ता, धर्त्ता और पालनकर्त्ता है। सृष्टि की आदि में परमात्मा जो वेदों का उपदेश नहीं करता तो आज पर्यन्त किसी मनुष्य को धर्मादि पदार्थों की यथार्थ विद्या नहीं होती। ईश्वर के अपने नियम अटल और अडिग हैं, उनमें परमात्मा किन्हीं कारणों से कोई परिवर्तन नहीं करता। वह निरन्तर चलते हैं, जैसे दिन, दिन के बाद रात और रात के बाद फिर दिन। सूर्य समय पर निकलता है। कोई भक्त सूर्य का एक दिन निकलना ही अपनी भक्ति, प्यार में रुकवाकर दिखाए तो हम मान लें कि ईश्वर भक्तों का गुलाम है और प्यारवश अपने नियमों का भी उल्लंघन कर देता है। प्रो० साहब का यह लिखना बिल्कुल वेदविरुद्ध और वैदिक ग्रन्थों के विरुद्ध है। ईश्वर ऐसा करने लगे तो ईश्वर अन्यायकारी, पक्षपाती बन जाएगा। ऐसा ईश्वर की व्यवस्था के विरुद्ध है, क्योंकि परमात्मा तो न्यायकारी है। जो ऐसा मानते और कहते, लिखते हैं वह बिलकुल सफेद झूठ है। ऐसी बातों से ही लोग पापों में प्रवृत्त हो रहे हैं कि दिनभर पापकर्म करो, सुबह मन्दिर में भगवान् से उनको माफ करवा लो क्योंकि परमात्मा तो भक्तों के प्यार में कुछ भी कर सकते हैं। यह गलत धारणा और मान्यता है कि भगवान् भक्तों के वश में या पाखण्डी गुरुओं का गुलाम है। वह तो सबको एक दृष्टि से देखता है। किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं करता। भक्तों के पाप क्षमा कर दे और दूसरों को फांसी लटका दे, ऐसा ईश्वर व्यवस्था में नहीं होता, मानव ऐसा कर रहा है। परमात्मा तो सब जीवों को उसके कर्मों का फल देता है। अच्छे को अच्छा और बुरे को बुरा। न उससे कम न उससे ज्यादा। प्रो० साहब ने ये काल्पनिक कथाओं को सुना सुनाया झूठों का पुलिन्दा छपवाकर घोर पाप किया है। परमात्मा इसके लिए आपको क्षमा नहीं करेगा। आप भी शायद परमभक्तों में से लगते हैं। इसको अजमा कर भी देख लेना। सुख-दुःख अच्छे-बुरे कर्मों का ही तो फल है जिनको मनुष्य यहीं पर भोग कर जाता है। स्वर्ग-नरक सब यहीं पर है, कोई ऊपर-नीचे नहीं।

प्रो० साहब ने लिखा कि ईश्वर भक्तों का गुलाम है। यह कितना घोर पाप किया है ऐसा लिखकर। प्रो० साहब जानते हैं कि गुलामियत का जीवन कैसा होता है। देश गुलाम था तो लोगों को देश की आजादी के लिए अपनी जानों की कुर्बानी देनी पड़ी थी। गुलाम तो बन्दी को भी कहा जाता है। इसका भाव यह हुआ कि परमात्मा भक्तों ने बन्दी बना रखा है। चाहे उससे खाना बनवाये, कपड़े धुलवाये, हल चलवाये, दुकान पर सौदा बिकवाये आदि कार्य करवाये और माता-बहिनों की तो मांग होगी कि पोचा-झाड़ू, बर्तन साफ भी परमात्मा ही कर जाया करे। इससे तो ऐसा आभास होता है कि लोगों की मति ही मारी गई है जो बिना सोचे-विचारे कुछ भी लिख देते हैं।

मनुष्यों को कृतकर्मों का फल भोगना ही पड़ता है, उनके भोगे बगैर उनसे निवृत्ति नहीं हो सकती। जब तक मनुष्य इन गलत भ्रान्तियों का शिकार होता रहेगा, दुःख भोगता रहेगा। आज धर्म के ठेकेदारा जनता को नरक से निकालने की बजाय, उल्टा नरक में धकेल रहे हैं। लोगों को गुमराह करके उनका धन बटोर रहे हैं।

कितना अनर्थ किया है प्रो० साहब ने भगवान् को पक्षी बना दिया, वह भक्तों का पक्ष लेते हैं। पक्षपाती तो अन्यायकारी होता है। परमात्मा तो न्यायकारी है। अन्यायकारी नहीं हो सकता। लिखा है कि अहल्या को भगवान् श्रीराम ने माफ कर दिया था और वह पुनः पत्थर से स्त्री बन गई। अब ऐसा क्यों नहीं होता, जो पहले की कथायें सुनाई जाती हैं। पहले तो श्रीराम और श्रीकृष्ण जी को ईश्वर का अवतार मानते थे अब तो श्रीराम और श्रीकृष्ण जी के भी अवतारी पैदा हो गये हैं। उन अवतारियों को कहा जाये कि वह भक्तों के परिवारजनों को मरने न दें और यदि वे मरते हैं तो उन्हें पुनः जीवित कर दें।

श्रीराम के विषय में अहल्या का दृष्टान्त देते हैं। यदि ऐसा था तो श्रीराम ने अपने पिता दशरथ को क्यों मरने दिया था? क्यों उसकी मृत्यु पर शोक जताया? इन अवतारवादियों ने खासकर इस देश का और विदेशों का भी बेड़ा गरक कर दिया है। प्रो० साहब को इन गलत बातों को लिखने से पहले सोचना चाहिए था। इससे तो ऐसा लगता है कि वह अपने शिष्यों को भी यही शिक्षा देते होंगे। इस प्रकार की निराधार मान्यताओं के कारण देश में अनेक प्रकार के पाप कार्य हो रहे हैं कि भगवान् भक्तों के पाप अपने ऊपर लेता है, क्षमा कर देता है, तीर्थयात्रा, स्नान आदि करने से कौन-से पाप धुल जाते हैं।

इन धर्म के ठेकेदारों ने सत्य के स्थान पर असत्य फैला रखा है। भगवान् की पूजा नहीं अपनी पूजा

शेष पृष्ठ 7 पर....

www.thearyasamaj.org

प्रभु सबका कल्याण करते हैं

❑ डॉ० अशोक आर्य, जी. 7, शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी, जिला गाजियाबाद

परमात्मा श्रमशील व्यक्ति, जो मेहनत करके अपना व्यवसाय चलाता है, को ही पसन्द करते हैं, उसकी ही सदा सहायता करते हैं। प्रभु ने तीन बिन्दुओं के माध्यम से जीव को इस प्रकार उपदेश किया है—

1. श्रम से धन प्राप्त करें— परमपिता परमात्मा की सदा यह ही इच्छा रही है कि मानव अथवा जीव सदा श्रमशील हो। वह चाहे कृषि करे या कोई अन्य व्यवसाय किन्तु यह सब कुछ वह मेहनत से करे, उद्योग से करे, पुरुषार्थ से करे। मेहनत से किया कार्य निश्चित ही कोई उत्तम फल लेकर आता है। प्रभु जीव को पुरुषार्थी ही देखना चाहता है। जो लोग आलसी होते हैं, प्रमादी होते हैं, अन्यों पर आश्रित होते हैं, ऐसे जीवों को वह पिता कभी भी पसन्द नहीं करते। इस कारण ही इसी कारण कहा गया है कि वह प्रभु श्रमशील व्यक्तियों तथा उनके निवास के लिए सब प्रकार के आवश्यक धनों के ईश होने के कारण वह उन जीवों की सहायता करके उन्हें अपना निवास बनाने के लिए तथा दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन आदि की व्यवस्था करने में सहयोग करते हैं, किन्तु करते उसके लिए ही हैं, जो मेहनत करता है, जो श्रम करता है, जो पुरुषार्थ करता है।

परमपिता परमात्मा सर्वशक्तिमान है। सब प्रकार की शक्तियां प्रभु में विद्यमान हैं। इन शक्तियों का संचालन, इन शक्तियों का प्रयोग भी वह स्वयं ही करते हैं। अपने कार्य करने के लिए उन्हें किसी अन्य की सहायता नहीं लेनी पड़ती। वह अपना काम स्वयं ही करते हैं। मानव को, जीव को तो अपने कार्य करने के लिए, अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सदा ही दूसरों पर आश्रित होना पड़ता है, दूसरों की सहायता लेनी पड़ती है। चाहे कृषि का क्षेत्र हो चाहे कोई व्यवसाय, उसे दूसरे की सहायता लेनी ही होती है। वह अकेले से अपने किसी भी कार्य की पूर्ति नहीं कर सकता। इसलिए उसे प्रबन्धन करना होता है, कुछ लोगों में काम बांटकर करना पड़ता है, तब ही उसके काम की पूर्ति होती है, किन्तु वह सर्वशक्तिमान परमात्मा ऐसा नहीं करता। वह अपने काम और उन कामों के सब भाग वह स्वयं ही पूर्ण करता है।

2. प्रभु श्रमशील को ही पसन्द करता है— प्रभु को श्रमशील मनुष्य, मेहनती मनुष्य, पुरुषार्थी मनुष्य ही पसन्द हैं। ऐसे जीव को ही वह अपना आशीर्वाद देते हैं, जो निरन्तर परिश्रम करते हैं। आलसी, प्रमादी को वह कभी पसन्द नहीं करते। जो अपना काम स्वयं करता है, ऐसे को ही वे पसन्द करते हैं। मन्त्र में एक शब्द आया है चर्षणीय। इस शब्द का स्थानापन्न कर्षणीय भी कहा गया है अर्थात् कृषि आदि, वह कार्य जिनको करने के लिए मेहनत करनी होती है, पुरुषार्थ करना होता है। जो लोग इस प्रकार के मेहनत से युक्त, पुरुषार्थ से युक्त कार्यों में लगे रहते हैं, ऐसे व्यक्ति ही प्रभु को पसन्द हैं तथा प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इन्हें ही प्रभु अपनी कृपा का पात्र समझते हुए इन पर कृपा करता है। ऐसे लोगों को वह पिता सब प्रकार के आवश्यक धन प्राप्त करने में सहाय होते हैं, सब ऐश्वर्यों के स्वामी बनाने में पथ-प्रदर्शक का कार्य करते हैं।

अशोक आर्य

इस मन्त्र में चर्षणीय तथा वसूनां शब्दों का प्रयोग किया गया है। इन शब्दों के द्वारा यह भावना ही प्रकट होती है कि प्रभु की दया उसे ही मिलती है जो पुरुषार्थी है। जो मेहनत नहीं करता, आलसी है, प्रमादी है, ऐसे लोगों को प्रभु न तो पसन्द ही करते हैं तथा न ही उनकी किसी प्रकार की सहायता करते हैं। प्रभु उन पर अपनी दया दृष्टि कभी नहीं डालते। अत: प्रभु की दया पाने के लिए पुरुषार्थी होना आवश्यक है।

3. ईश प्रभु सबका कल्याण करते हैं— परमपिता परमात्मा पांचों प्रकार के मनुष्यों के ईश हैं। इस वाक्य से एक बात स्पष्ट होती है कि इस संसार में पांच प्रकार के मनुष्य होते हैं। हम दूसरे शब्दों में इस प्रकार कह सकते हैं कि प्रभु ने इस संसार के मानवों को पांच श्रेणियों में बांट रखा है। यह श्रेणियां उनकी योग्यता अथवा उनके गुणों के अनुसार बनायी गई है। जिस प्रकार एक विद्यालय में विभिन्न कक्षाएं होती हैं तथा प्रत्येक शिक्षार्थी को उसकी योग्यता के अनुसार कक्षा दी जाती है। जिस प्रकार हम देखते हैं कि इस विद्यालय में विभिन्न प्रकार के कर्मचारी होते हैं। प्रत्येक कर्मचारी को उसकी योग्यतानुसार चपरासी, लिपिक, अध्यापक अथवा मुख्याध्यापक का पद दिया जाता है। यह सब प्रभु की व्यवस्था की नकल मात्र ही है, क्योंकि प्रभु ने इस जगत् के मानवों को, उनकी योग्यता के अनुसार पांच श्रेणियों में बांट रखा है। यह श्रेणियां इस प्रकार हैं—मानव समाज=(क) ब्राह्मण, (ख) क्षत्रिय, (ग) वैश्य, (घ) शूद्र तथा (ङ) निषाद। यह प्रभु की व्यवस्था है। जिसमें जिस प्रकार के गुण हैं अथवा जिसमें जिस प्रकार की योग्यता है, उसे उस प्रकार के वर्ग में ही प्रभु स्थान देते हैं। इसके साथ ही प्रभु उपदेश भी करते हैं कि हे मानव! तेरी वर्तमान योग्यता को देखते हुए मैंने तुझे इस श्रेणी में रखा है, इस वर्ग में रखा है, यदि तूं पुरुषार्थ करके, मेहनत करके अपनी योग्यता को बढा लेगा तो तुझे सफल मानकर ऊपर की श्रेणी में भेज दिया जावेगा और यदि तूं प्रमाद कर, आलसी होकर अपनी योग्यता को कम कर लेगा तो तुझे निरन्तर उस श्रेणी में ही रहना होगा जिस प्रकार एक असफल बालक को अगले वर्ष भी उसी कक्षा में ही रहना होता है, किन्तु तूने फिर भी मेहनत न की तो तेरी श्रेणी नीचे भी जा सकती है। इस प्रकार पाँच श्रेणियाँ बनाकर प्रभु ने मेहनत करने का मार्ग मानव मात्र के लिए खोल दिया है।

वह परमात्मा तो सब मनुष्यों के ईश हैं। सब पर समान रूप से दया करते हैं। सब को समान रूप से धन देते हैं किन्तु देते उतना ही हैं जितना उसने पुरुषार्थ किया हुआ होता है। जिस प्रकार एक कपड़े की मिल के सेवक को मालिक उतना ही धन प्रतिफल में देता है जितना उसने कपड़ा बनाया होता है, उससे अधिक नहीं देता। इस प्रकार ही वह प्रभु भी मानव को उतना ही देता है, जितना उस मानव ने मेहनत किया हुआ होता है, इससे अधिक कुछ भी नहीं देता। कपड़े की मिल के मालिक से तो कई बार अग्रिम भी प्राप्त किया जा सकता है किन्तु परमात्मा किसी को अग्रिम धन नहीं देता। यह ही उस प्रभु की दया है, उस प्रभु की कृपा है। इस प्रकार प्रभु सबको धन देकर सबका कल्याण करते हैं, क्योंकि वह ही कल्याणकारी हैं।

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —आचार्य बलदेव

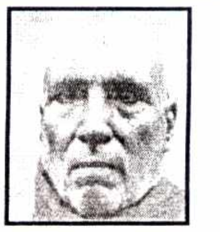

आर्यों के तीर्थ

दयानन्दमठ, दीनानगर

जिला गुरदासपुर (पंजाब)

को स्थापित हुए 75 वर्ष होने पर

हीरक जयन्ती समारोह

18, 19, 20 अक्तूबर, 2013

को बड़ी धूम-धाम एवं हर्षोल्लास से मनाया जायेगा

जिसमें आप सब महानुभाव सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :- **स्वामी सदानन्द सरस्वती**

अध्यक्ष, दयानन्दमठ, दीनानगर एवं समस्त परामर्श समिति

सम्पर्क :- 01875-220110, 094782-56272, 094172-20110

www.thearyasamaj.org

प्रभु से मिलन कब होगा

-: वेद-मन्त्र :-

उत स्वया तन्वा३ सं वदे तत्कदा न्वन्तर्वरुणे भुवानि।
किं मे हव्यमहृणानो जुषेत कदा मृळीकं सुमना अभि ख्यम्॥

अर्थ— (उत) कभी-कभी मैं ध्यानावस्था में (स्वयातन्वा) अपने आप से (संवदे) वार्तालाप करता हूँ कि (कदा नु) कब निश्चय से (वरुणे अन्त: भुवानि) उस उपास्य देव के स्वरूप में प्रवेश करूँगा। (किम्) क्या (मे) मेरी (हव्यम्) उपासना रूप भेंट को वरुण देव (अहृणान:) प्रसन्न होकर (जुषेत) स्वीकार करेंगे। (कदा) कब (सुमना:) प्रसन्न चित्त हो (मृडीकम्) सुखदाता परमेश्वर के (अभिख्यम्) ज्ञान नेत्र से उसके दर्शन करूँगा।

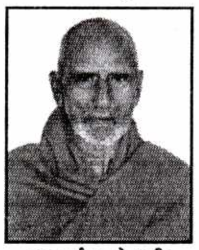

आचार्य बलदेव जी

अहो कितने दिन बीत गये उसके दर्शन करने की चाह में। कभी-कभी मैं विक्षिप्त-सा होकर अपनी देह से ही वार्तालाप करने लगता हूँ कि अय मेरी देह [मन, बुद्धि, इन्द्रिय] तुम ही बताओ मैं कब उस वरणीय के स्वरूप में प्रवेश करूँगा। मैं जो भक्ति की भेंट लेकर आया हूँ, क्या वे वरुणदेव प्रसन्न होकर स्वीकार करेंगे। कब मैं प्रसन्नचित्त हो उस सुख, आनन्द के देने वाले के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त करूँगा।

पृच्छे तदेनो वरुण दिदृक्षूपो एमि चिकितुषो विपृच्छम्।
समानमिन्मे कवयश्चिदाहुरयं ह तुभ्यं वरुणो हृणीते॥ (ऋ० 7.86.3)

हे प्रभो! तुम्हारे दर्शनों का अभिलाषी हो तुम्हारे द्वार पर आया हूँ। मैं आपसे पूछता हूँ कि वे कौन-से पाप हैं जिनके कारण मैं उनसे बन्धा हुआ हूँ और आपके दर्शन से वंचित हो रहा हूँ।

(चिकितुष: विपृच्छम्) ज्ञानी पुरुषों से भी मैं इस विषय में पूछता रहा हूँ। (समानमिन्मे कवयश्चिदाहु:) वे सभी पूज्य विद्वान् मुझे एक ही बात कहते हैं। उनका प्रिय बनने का प्रयत्न करो। जिसका वह वरण कर लेता है उसके सामने अपना सर्वस्व खोलकर रख देता है। कुछ छिपाता नहीं।

किमाग आस वरुण ज्येष्ठं यत्स्तोतारं जिघांसति सखायम्।
प्र तन्मे वोचो दूळभ स्वधावोऽव त्वानेना नमसा तुर इयाम्॥ (ऋ० 7.86.4)

हे दुष्टों से रक्षा करने वाले वरुण देव। (किमाग आस) मेरा कौन-सा अपराध है? (यत्) जिसके कारण (ज्येष्ठं स्तोतारं सखायं जिघांसति) आपके अत्यन्त भक्त एवं मित्र बने मुझ स्तोता को दण्डित करना चाह रहे हो। (दूडभ:) हे अविनाशी, (स्वधाव:) अन्नपते, जीवन के स्वामिन् (प्र तन्मे वोच:) मुझे वह उपाय बतलाइए। जिससे (अनेना:) निष्पाप होकर (नमसा) भक्ति द्वारा (तुर:) अति शीघ्र त्वा (अव इयाम्) तुझ तक पहुँच जाऊँ।

हे प्रभो यह कैसा आश्चर्य है? मैं आपका परम भक्त हूँ। हर समय आप में मेरी वृत्ति लगी रहती है। मैं जब भी कोई कार्य करता हूँ, उस समय आपका स्मरण करता हूँ और कहता हूँ, मुझसे वे प्रियतम ही यह कार्य करा रहे हैं। मैं तो केवल निमित्त मात्र हूँ। फिर भी आप अप्रसन्न हैं और मुझे दर्शन न देने का दण्ड दे रहे हैं। अब मैं आपसे ही पूछता हूँ कि वह कौन-सा मार्ग है जिस पर चलकर मैं आपके पास पहुँचने में सफल हो सकूँ।

अव द्रुग्धानि पित्र्या सृजा नोऽव या वयं चकृमा तनूभि:।
अव राजन्पशुतृपं न तायुं सृजा वत्सं न दाम्नो वसिष्ठम्॥ (ऋ० 7.86.5)

हे प्रकाश स्वरूप स्वामिन्! कुछ कुसंस्कार तो हमें माता-पिता आदि से मिले हैं, कुछ पाप इन शरीरों से करते हैं। कुछ हमारी प्रवृत्तियाँ पशु तुल्य हैं जिनके कारण हम बन्धन में पड़े हुए हैं। आप इन्हें कृपा करके हमसे दूर कीजिए। हमारे अन्त:करण अज्ञान अन्धकार से ढके हुये हैं जिसके कारण मलिन दर्पण के सदृश आपका दर्शन नहीं हो पा रहा। **तमसो मा ज्योतिर्गमय** हमें इस अविद्या, अविवेक से छुड़ा ज्ञान का प्रकाश कीजिये।

न स स्वो दक्षो वरुण ध्रुति: सा सुरा मन्युर्विभीदको अचित्ति:।
अस्ति ज्यायान्कनीयस उपारे स्वप्नश्चनेदनृतस्य प्रयोता॥ (ऋ० 7.86.6)

हे वरुण देव! (न स: स्व: दक्ष:) अपनी प्रवृत्ति के अनुसार किया जाने वाला कर्म ही पाप वृत्ति में कारण नहीं होता और भी अनेक कारण हैं जिनसे पाप में प्रवृत्ति होती है। (ध्रुति: सा सुरा) जैसा मद्यपान करने वाले की बार-बार इच्छा होती है और उसके वशीभूत हो वह मद्यशाला की ओर चल पड़ता है वैसे ही आत्मा की सुखों को भोगने की जो प्रवृत्ति है वह उसे अनुचित कार्यों की ओर प्रेरित करती रहती है। (मन्यु:) अहंकार, क्रोध (विभीदक:) द्यूत, जुआ आदि का व्यसन (अचिति:) अज्ञान, मोह भी पाप के कारण हैं। इनके अतिरिक्त (स्वप्नश्चनेदनृतस्य प्रयोता) स्वप्न में किया कर्म भी अनृत, असत्य, पाप की ओर ले जाने वाला होता है। स्वप्न किसी व्यक्ति का दर्पण है। उसे जैसे स्वप्न आते हैं, समझो उसका व्यक्तित्व वैसा हीहोता है। बाहर से चाहे वह कितना भी देवता दिखलाई दे रहा है।

हे प्रभो! अब अनृत या पाप से बचने का एक ही उपाय है—(अस्ति ज्यायान् कनीयस उपारे) इस तुच्छ जीव के हृदय में अन्तर्यामी पुरुष परमेश्वर भी विराज रहा है जो अच्छे कार्य के लिए उत्साहित और पाप कर्म में भय, शंका, लज्जा, ग्लानि के भाव उत्पन्न कर उसे उधर जाने से रोक रहा है।

अरं दासो न मीळ्हुषे कराण्यहं देवाय भूर्णयेऽनागा:।
अचेतयदचितो देवो अर्यो गृत्सं राये कवितरो जुनाति॥ (ऋ० 7.86.7)

हे वरुण! मैं सबके पालक रक्षक, मार्गदर्शक आपका सेवक बन पापों से दूर हो जाऊँ वह प्रभु (गृत्सम्) अपनी स्तुति करने वाले को (अचेतयत्) सावधान करता रहता है और (राये जुनाति) उसे ऐश्वर्य सम्पन्न कर देता है। उसी की स्तुति करने से वह वरुण देव प्रसन्न होंगे और दर्शन देकर हमें अनुगृहीत करेंगे।

(साभार—वेद-स्वाध्याय) **—आचार्य बलदेव**

श्रद्धा, ज्ञान व समाधि

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

इस संसार में ऐसा कौन मनुष्य है जो पूर्ण सुख नहीं चाहता। पूर्ण सुख मिलता है मुक्ति से। मुक्ति मिलती है ईश्वर साक्षात्कार से। प्रत्येक देहधारी को दु:ख प्राप्त होता है। लेकिन समाधि सिद्ध योगी पहाड़ के समान दु:ख को भी अति सहज ही लेता है। मुक्ति के अतिरिक्त देह में रहते हुए यह समाधि का फल है। अत: प्रत्येक मनुष्य को इसका अभ्यास करना चाहिए।

आचार्य अभय आर्य

समाधि के लिए श्रद्धा व ज्ञान दोनों की आवश्यकता है। 'योगदर्शन' में स्पष्ट है कि श्रद्धा से, तीव्र संवेग से समाधि की शीघ्र प्राप्ति होती है। अपनी जीवनी में स्वामी श्रद्धानन्द जी लिखते हैं कि जहाँ ऋषि दयानन्द जी भ्रमण के लिए जाते थे, वे प्रात: पहले ही वहाँ बैठ गए। वे लिखते हैं कि ऋषि दयानन्द जी एक वृक्ष के नीचे बैठे व तुरन्त ध्यानमग्न हो गए। उस समय उनकी आकृति-प्रकृति को देखकर ही मुंशीराम जी को निश्चय हो गया कि स्वामी दयानन्द की शीघ्र समाधि लग गई।

समाधि के लिए ज्ञान का होना भी आवश्यक है। उपनिषद् स्पष्ट करता है कि हृदय की ग्रन्थियों का खुलना, संशयों का मिटना भी ईश्वर साक्षात्कार के लिए अति आवश्यक है। संशय, अज्ञान, अविद्या स्वयं ही योग के मार्ग में बाधाएँ हैं।

पंचकोश, पंचमहाभूत, पंचतन्मात्रा, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, आत्मा, परमात्मा के ज्ञान से ही योगी समाधि को प्राप्त करता है। पंचमहाभूत, तन्मात्रा आदि पर ध्यान से ही सम्प्रज्ञात समाधि का आरम्भ माना गया है। 'योगदर्शन' के सूत्र के अनुसार इसे प्राप्त करने के लिए 'वितर्क', 'विचार', 'आनन्द', 'अस्मिता', इन सीढ़ियों से गुजरना पड़ता है। स्वामी दयानन्द ने गिरि, पुरी, साधुओं से योग के रहस्य लिये थे।

शरीर में रहते हुए भी जिसका चित्त विषय-वासनाओं में लिप्त नहीं होता, जो आत्मा को शरीर से पृथक् भलीभांति समझ लेता है, इसी रूप में आचरण भी करता है, ऐसे 'विदेह' योगी को भी समाधि की प्राप्ति होती है। स्वामी दयानन्द सत्य के मार्ग पर चलते हुए धमकियाँ मिलने पर स्पष्ट घोषणा करते हैं कि उनके शरीर को भले ही कोई नष्ट कर दे, लेकिन उनकी आत्मा को कोई नष्ट नहीं कर सकता। अन्तिम समय में सारे शरीर पर भयंकर फफोले निकले हुए हैं, लेकिन फिर भी उनकी मूर्ति इतनी शान्त है कि उनसे पहली बार मिलने वाले मुनिवर गुरुदत्त विद्यार्थी काफी देर तक उन्हें निहारते रहते हैं।

संसार में मृत्यु आदि दृश्यों को देखकर उत्पन्न हुआ वैराग्य भी समाधि का साधन बनता है। स्वामी दयानन्द ने बहन व चाचा की मृत्यु को देखा। मृत्यु पर विजय पाने के लिए सत्य की खोज में प्रवृत्त हुए। संसार के दु:खों को मिटाने के लिए भी ईश्वर से सहाय की प्रार्थना करते थे। 'उपनिषद्' कहता है कि यह आत्मा बलहीन को प्राप्त नहीं होता। 'योगदर्शन' में श्रद्धा के साथ-साथ 'वीर्य'-उत्साह, बल वाले साधक की समाधि मानी गई है। स्वामी दयानन्द जी आत्मिक बल के साथ-साथ शारीरिक बल के भण्डार थे।

इस प्रकार स्वामी दयानन्द समाधि के हर प्रारूप पर पूर्ण हैं। वे पूर्ण योगी थे। न्यूनता होने पर भी योग का अभ्यास तो करना ही चाहिये। जितना भी श्रद्धा, सत्य, ज्ञान के आधार पर कर पायेंगे उतना तो लाभ मिलेगा ही। स्वामी जी मिलने वालों को योग्यतानुसार किसी को सन्ध्या, किसी कोगायत्री व किसी को केवल 'ओ३म्' के जप का उपदेश देते थे। योगदर्शन के सूत्रों का हिन्दी में भाष्य पर लिखी आचार्य ज्ञानेश्वरार्य की पुस्तक 'योगदर्शनम्' मुझे बहुत रुचिकर लगती है। कॉलेज स्तर व बी.एड. के पाठ्यक्रम या आयुर्वेद के पाठ्यक्रम में जहाँ भी 'योग' विषय हो, वहाँ इस पुस्तक का अनुमोदन स्वीकार्य हो जाए तो बहुत बड़ा लाभ हो जाए।

www.thearyasamaj.org

उत्तर भारत में गोतस्करों का आतंक

❑ शमशेर नहरा, 397/22, दुर्गा कॉलोनी रोहतक मो० 9466385012

गतांक से आगे...

सुप्रीम कोर्ट ने 2 जुलाई 2013 को उत्तरी भारत के राज्यों को मिलावटी दूध की बिक्री रोके जाने के लिए कठोर कदम उठाने के लिए कहा है। माननीय सुप्रीम कोर्ट की बात तो बिल्कुल जायज है कि दूध बिना मिलावट का ही होना चाहिए लेकिन दुधारू गायों व भैंसों को जिस रफतार से हत्थे में चढ़ाया जा रहा है तो आने वाले समय दूध आयेगा कहां से? जी न्यूज पर वर्ष 2007 में दिखाये गये सर्वे के अनुसार भारत में 1947 में गायों की 60 नस्लें थी जो 2007 में घटकर 33 नस्लें रह गई यानि 27 नस्लें विलुप्त हो गई। इसी प्रकार हरियाणा में वर्ष 1997 की पशु गणना में गायों की संख्या 23 लाख 11 हजार आंकी गई जबकि 2003 में गोधन की संख्या घटकर 14 लाख 40 हजार 163 रह गई मात्र पांच साल की अवधि में 859536 यानि 34 प्रतिशत की गिरावट गौ मांस व अन्य पशुओं के मांस के निर्यात से निर्यात शुल्क व राजस्व कमाने वाली सरकारों व समाज के लिए गम्भीर खतरे का संकेत है। अगर वैध अवैध बूचड़खाने तथा कथित सेक्यूलर नेताओं की छत्र छाया में यूं ही चलते रहे दूध जैसा अमृत पेय बीते जमाने की बात हो जायेगा तथा खेती योग्य बैल व ऊंट दूढे से भी नहीं मिलेंगे।

पशुओं की ऐसी लूट व सरेआम वध की अन्धेरगर्दी के किस्से मुस्लिम शासकों व नवाबों के समय के सुना करते थे वही इतिहास आज हमारी आंखों के सामने दोहराया जा रहा है। बेबस व लाचार पशुपालक पशु लुटने के बाद बार-बार 100 नम्बर पर फोन मिलाता है, थाने में एफ आई आर करवाता है, सम्बन्धित जिले के डी सी एस पी से मिलता है, लेकिन चारों तरफ से हार थक, रो पीट निराश होकर अपने घर बैठ जाता है। हरियाणा पुलिस की लुटे हुए पशुओं को बरामद करना तो दूर इन कसाईयों की बस्तियों में घुसने की भी हिम्मत नहीं है। पशु लुटेरे व पशु तस्कर मौजूदा प्रजातन्त्र की व्यवस्थागत खामियों का भरपूर फायदा उठा रहे हैं तथा अपनी गतिविधियों को बेखौफ होकर अन्जाम दे रहे हैं। मुस्लिमों के प्रति अति तुष्टिकरण की नीति के चलते अधिकतर राजनीतिक दलों के नेता इन पशु लुटेरों की गतिविधियों से आंखें मूंदे हुए हैं। पशु लुटेरे व पशु तस्कर एक के बाद एक पशु तस्करी रोकने वाले नागरिकों को मौत के घाट उतार रहे हैं और हरियाणा के मुख्यमंत्री अपना राजधर्म भुलाकर कानो में तेल व जुबान पर ताला लगाए हुए हैं। सोहराबुदीन की मौत पर विलाप करने वाली यू पी ए अध्यक्षा सोनिया गांधी मौत के सौदागर पशु लुटेरों की बर्बरता पर मौन धारण किये हुए हैं। न आज तक पुलिस ने किसी लूटे गये या चोरी हुए पशु की रिकवरी की है और न ही सेक्यूलरिज्म के अवतार बने सरकारों के नेताओं में से किसी ने पीड़ित पशुपालक को क्षति पूर्ति के रूप में मुआवजा दिलवाने की जहमत उठाई है। बहुत ही आश्चर्य की बात छोटी-छोटी बातों पर ब्यानबाजी करने वाले नेताओं का इतने विशाल पैमाने पर पशुओं की लूट, तस्करी व गौकसी की घटनाओं पर ब्यान तक नहीं आता। हैरानी की बात ये है कि राष्ट्रीय मीडिया के लिए पशुओं की लूट, तस्करी व पशु तस्करों द्वारा की जाने वाली बर्बर हत्याएं बहस का मुद्दा ही नहीं हैं। समुद्र में सुई को ढूंढने की काबलियन रखने वाले इलैक्ट्रोनिक मीडिया के कैमरे इन हत्यारे पशु लुटेरों की बस्तियों तक नहीं पहुंच पाते।

सरेआम पशु लूट की प्रस्तुत घटना हरियाणा के सोनीपत जिले के भटगांव नामक गांव की है जिसमें 12 जून 2013 की रात को करीब 1:30 बजे तीन परिवारों की दुधारू गाय हथियार बंद गुण्डे कसाई जिनमें से दो परिवारों की गाय जो अपने बछड़ुओं के साथ दोनों घरों के बीच में पड़ने वाले प्लाट में बंधी हुई थी उनके परिजनों के सामने से ही कसाई ले गये। चांद दहिया की पत्नी सुमित्रा दहिया ने बताया कि वह गाड़ी की आवाज सुनकर घर का दरवाजा खोलकर बाहर निकली तो देखा 8-10 गुण्डे कसाई पिकअप गाड़ी से उतरे और बहुत ही बेशर्मी से भद्दी-2 गालियों के साथ जान से मारने की धमकी दी। कसाइयों के आंतक के भय से वह पिक अप गाड़ी के पास ही बैठ गई तथा कसाई दोनों गायों को उसकी आंखों के सामने से ही लादकर ले गये। वह उनके जाने के बाद ही वह वहां से उठने का साहस कर पाई। पड़ोसी सुभाष दहिया पुत्र हवा सिंह ने बताया कि वह कसाइयों का विरोध करने के लिए घर से बाहर निकल रहा था लेकिन परिजनों ने यह कह कर रोक लिया कि कसाइयों के पास तमचें व गाड़ी में रोड़े पत्थर हैं और वे संख्या में भी अधिक है विरोध करने की कोशिश की तो जान हाथ धो बैठोगें। इस तरह कसाई आराम से दोनों परिवारों की गायों को उनकी आंखों के सामने से ले गये। सुबह इस घटना की खबर मिलने पर एक तीसरे शख्स मुन्शी सुपुत्र जुगती लुहार जो कि मुस्लिम बिरादरी से सम्बन्ध रखता है ने बताया कि रात के 1:30 बजे के आस पास उसकी गाय भी खूंटे से गायब मिली। वह कुछ देर तक वह गाय को ढूंढता रहा लेकिन ये सोचकर की कहीं खुला गई होगी सवेरे आ जायेगी। सुबह होने पर सारे माजरे का राज खुल गया कि उसकी गाय भी वही कसाई ले गये।

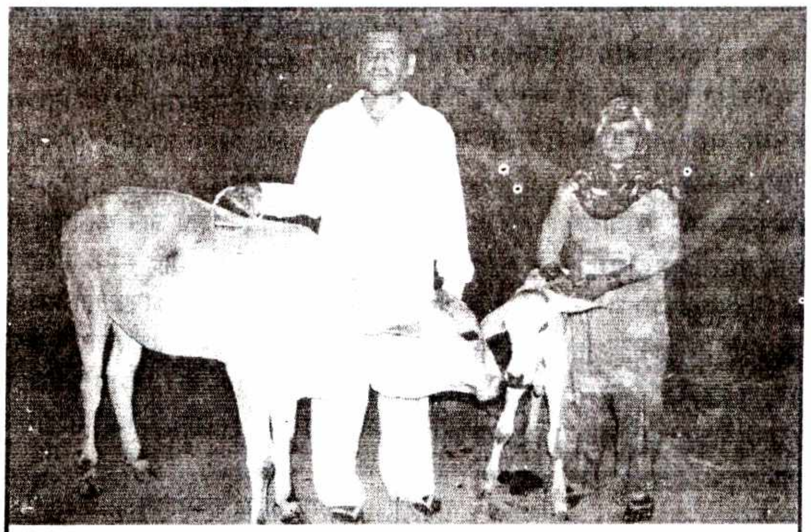

हरियाणा के सोनीपत जिले के भठगांव नामक गांव के पीड़ित पशु मालिक सुमित्रा दहिया व सुभाष दहिया जिनकी दो दुधारू गाय 12 जून की रात को डेढ़ बजे 8-10 गुण्डे कसाई इनकी आंखों के सामने लूट ले गये।

शराबबन्दी, गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध व हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित करना आजादी आन्दोलन के कांग्रेस के तीन प्रमुख मुद्दे थे। विडम्बना है कि आजादी के फौरन बाद तुष्टिकरण की नीति के चलते पं नेहरू ने अपनी तानाशाही पूर्ण नीतियों को चलाते हुए आजादी आन्दोलन में बढ़-चढकर भाग लेने वाली बहुसंख्यक जनता से किये गये कांग्रेस के वायदों को सिरे से नकार दिया।

नेहरू द्वारा अपनाई गई नीतियों के कारण ही आज शराब ने पूरे समाज को तबाह कर दिया है। महिलाओं के साथ बलात्कार, घरेलू अत्याचार व समाज में बढ़ते अपराध का सबसे बड़ा कारण शराब है। शराब की हालत आज देश में यह है कि गांव व शहर में आपको पानी मिले या न मिले शराब जरुर मिल जायेगी। यही हालत हिंदी भाषा की है। अदालती कामकाज व रोजगार की भाषा अंग्रेजी होने के चलते हिन्दी आज भी अंग्रेजी के घर पानी भरने को मजबूर है। यही बात गौहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध की। गौ हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने की बजाय संविधान की धारा 48 में राज्य के नीति निर्देशक तत्वों में डाल दिया गया है। पण्डित नेहरू की इसी नीति का नतीजा है कि कभी मां मान कर पूजी जाने वाली गाय की देश के अनेक हिस्सों में बेकद्री हो रही है और गऊ माता के गले पर सरेआम कसाइयों के खंजर चल रहे है।

दुधारू व खेती योग्य पशुओं की इतने विशाल पैमाने पर हो रही लूट, तस्करी व अवैध रूप से हो रहे वध से साबित होता है कि देश में संविधान व कानून का शासन नहीं चल रहा है। देश के कानून व शासन में पशु पालकों व आम जनता का विश्वास बना रहे इसके लिए जरूरी है कि पशु लुटेरों, पशु तस्करों व अवैध रूप चलने वाले बूचड़खानों पर सख्ती से लगाम लगाई जाये।

गौवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध होने के बावजूद किस आधार पर मेवात, यू पी व दिल्ली में इतने विशाल पैमाने पर गौकशी की जा रही है। गौतस्करी, पशुओं की लूट, चोरी व पशु क्रूरता

शेष पृष्ठ 5 पर....

भजन (तर्ज—हरियाणवी गंगा जी तेरे....)

टेक-टंकारा गुजरात में जित जन्मे देवदयानन्द महर्षि मौरवी रियासत में।
टंकारा गुजरात में.. ॥

1. उच्चकोटि ब्राह्मण कुल में उड़े कृष्ण जी हुए तिवारी।
पढ़ा-लिखा-निपुण-धार्मिक वो उस राज्य का उच्च अधिकारी।
अमृताबाई पत्नी उसकी लक्ष्मी रूप पूजनीय नारी।
अमृताबाई पत्नी.. ।
उसकै कई सन्तान हुई जिनमें श्रेष्ठ पुत्र हुआ मूलशंकर।
लाडला बचपन वो घणा रहा मात-पिता का प्यारा बनकर।
शिवरात्रि ने उसे मंदिर लेगे कहा आज दर्शन देंगे यहाँ शिवशंकर।
शिवरात्रि ने.. ।
जाग्या बेचारा उस रात न नित सोवै भक्त नीन्दड़क देखरा वो चूहा की शरारत में।
टंकारा गुजरात में.. ॥

2. चढ़ावा खाकै मस्त चूहाँ न फेर शिवलिंग पै मल-मूत्र किया।
वो बालक सोच्चै ये कैसा देव जिसनै आत्मरक्षा में भी ना उन्हें उत्तर दिया।
सच्चा शिव कहीं और है जिसकी तलाश में वो पुत्र खुआ।
सच्चा शिव.. ।
भूमण्डल छान मारा उस नै जप-तप करकै शुरू
मथुरा जाकै वेद-पढ़े जहाँ श्री विरजानन्द जी मिलगे गुरु।
कहा पाखण्ड का खण्डन करिए तूँ सच्ची श्रद्धा रख ज्ञान भरू।
कहा पाखण्ड का.. ।
वो पुचकारा गुरु हाथ न शिष्य बणा दया से दयानन्द मेर हुई सही हिफाजत में।
टंकारा गुजरात में.. ॥

3. पूर्ण ज्ञान गुरु से लेकै वो चला दूर जगत का करण अन्धकार।
अनेक जगह विरोध झेल कै उसनै वेदों का करा प्रचार।
जन-जन के मन-भाव बदल कै वो महर्षि कहलाया परोपकार।
जन-जन के.. ।
वो वेदों का रक्षक और ज्ञाता न्यू जाण गया ब्रह्माण्ड।
ब्रह्मचर्य में बल दिखाया हैरान हुए राजा और भिड़ते साण्ड।
मोक्षमार्ग सच्चाई लिखग्या 'सत्यार्थप्रकाश' में कर्म-काण्ड।
दिया छुटकारा-छुआछात तैं नित काटे नारी के फंद जागृति आई हर एक बसासत में।
टंकारा गुजरात में.. ॥

4. फेर पाखण्डी और वेश्याएँ चिड़गी जिन नै कई बै महर्षि को दिया जहर।
प्राणायाम योग के बल से वो निकल गया उसी पहर।
फेर नन्हीबाई ने जगन्नाथ से मिलकै कांच प्युआ कै करा कहर।
फेर नन्हीबाई.. ।
माफ कर गया उन पापियों को वो जिन नै मारा उसे बेमौत।
स्वार्थ और रिश्वत के लालच में बुझा दी वा ज्ञान-जोत।
सुनहरासिंह नरवाल खोजरा उस ज्ञानी-गुणिये की कितनी स्रोत।
लगै फटकारा शुरुआत मैं हित-चित-चेतन आनन्द मिलै धूम तेरी विरासत में।
टंकारा गुजरात में.. ॥

—सुनहरा सिंह नरवाल (रिटायर्ड सब इंस्पेक्टर) हरियाणा पुलिस
गाँव कथूरा, तह० गोहाना (सोनीपत) मो० 9416357176

उत्तर भारत में गोतस्करों का..... पृष्ठ 4 का शेष....

को गैर जमानती अपराध घोषित किया जाये। मंजूरशुदा बूचड़खानों को छोड़ कर अवैध रूप से चल रहे सभी बूचड़खानों पर तत्काल रोक लगायी जाए। लाइसेंस प्राप्त बूचड़खानों मे कानून और नियम के अन्तर्गत आने वाले पशुओं का ही वध हो। वैध रूप से चलने वाले बूचड़खानों में प्रत्येक पशु की खरीद फरोख्त का ब्यौरा, डाक्टरी सर्टिफिकेट व विडियोग्राफी से मोनिटरिंग की जाए। रात के समय पशुओं को लादकर चलने वाले वाहनों पर पूर्ण पाबन्दी लगाई जाये। पैदल व वाहनों में लादकर सीमा पर ले जाने वाले पशु कारोबारियों से पशुओं की खरीद का उद्देश्य व प्रमाणित कागजात, किस गांव व शहर में ले जायेंगे तथा पशु कारोबारियों का नागरिकता पहचान पत्र का पूरा ब्यौरा पुलिस नाके पर दर्ज होना चाहिए। पशु तस्करी में एजेंट की भूमिका निभाने वाले को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाना चाहिए। पुलिस या पशु तस्करी रोकने की मुहिम में जुटे सामाजिक व धार्मिक संगठनों से जुड़े नागरिकों पर सीधी गाड़ी चढ़ाकर कुचल मारने की कोशिश करने वाले पशु तस्करों को आजीवन कारावास व वाहन से कुचल कर जख्मी करने व जान से मारने वाले पशु तस्कर को सजा ए मौत दी जाये।

पुलिस के इशारा करने पर गाड़ी न रोकने वाले पशु तस्करों की गाड़ी के टायर में गोली मारने का आदेश दिया जाये। मजहबी सुपरीमेसी की मानसिकता से ग्रस्त ये पशु लुटेरे व पशु तस्कर साधारण अपराधी नहीं हैं इंसान के रूप में शैतान हैं। पुलिस के रोके जाने पर आत्मसमर्पण करने की बजाय भागने की कोशिश करने वाले पशु तस्करों पर सीधी गोली मारने के आदेश दिये जाएं। पशु लुटेरों व पशु तस्करों व पशु क्रूरता करने वालों पर टाडा, मकोका की तर्ज पर गुण्डा एक्ट लगाया जाए। पशु तस्करी में इस्तेमाल किये गए वाहन को जब्त किया जाए तथा वाहन के मालिक पर मुकदमा चलाया जाए। सरपंचों व पशु मालिकों के फर्जी दस्तावेज रखने वाले पशु कारोबारियों पर कठोर कारवाई की जाये। पशु तस्करी व पशुओं की लूट में शामिल लुटेरों पर कारवाई में ढ़ील व लापरवाही बरतने वाले पुलिस कर्मचारियों व अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाये। पुलिस नाकों पर रिश्वत लेकर गाड़ी पार कराने, पशुओं की लूट, पशु तस्करी, पशु क्रूरता व गौवध को गैर जमानती अपराध घोषित किया जाये तथा इन अपराधों में संलिप्त आदतन अभियुक्तों को विशेष अदालतों का गठन कर त्वरित सजा सुनाई जाये।

देशी नस्ल की गायों की प्रजातियों को लुप्त होने से बचाने के लिए संरक्षण दिया जाये तथा नस्ल सुधार किया जाये। सर्वोच्च न्यायालय के वर्ष 2008 में दिये गये फैसले के अनुसार प्रत्येक गाय को 15 रूपये प्रतिदिन चाराभत्ता जो कई साल बीतने के बावजूद हरियाणा सरकार ने चालू नहीं किया है, चालू किया जाए। लावारिस गऊएं सड़कों व गलियों में न घूमे व कसाइयों का आसान शिकार न बनें इसके लिए जरूरी हैं पूरे देश में गौचरान की जमीनों को अवैध कब्जाधारियों से मुक्त कराया जायें। लगातार हो रही दुधारू पशुओं की लूट, चोरी, तस्करी व गऊमाता के गले पर चल रहे अवैध रूप से खंजर की घटनाएं कहीं लावा बनकर साम्प्रदायिकता रूपी ज्वालामुखी का रूप धारण न कर ले इससे पहले सरकार को आर्थिक व धार्मिक भावनाओं के ऊपर से घात करने वाली पशु लुटेरों व पशु तस्करों की गतिविधियों पर सख्ती से लगाम लगानी चाहिए।

आर्यों का तीर्थ दयानन्दमठ, दीनानगर

दिनांक 18, 19 एवं 20 अक्तूबर 2013 को दयानन्दमठ, दीनानगर, जिला गुरदासपुर (पंजाब) को स्थापित हुए 75 वर्ष होने पर 'हीरक जयन्ती समारोह' बड़ी धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। आर्य परिवारों को दयानन्दमठ, दीनानगर ले जाने हेतु गुड़गाँव से एक बस 17 अक्तूबर को रात्रि 9.30 बजे चलेगी जो 20 अक्तूबर रात्रि वापिस आयेगी।

बस किराया 1250/- प्रति सवारी, शेष व्यय यात्री स्वयं करेंगे

कार्यक्रम

दिनांक 17 अक्तूबर 2013 प्रस्थान रात्रि 9.30 बजे।

स्थान-आर्य वीर नेत्र चिकित्सालय, पुरानी रेलवे रोड, नई कॉलोनी मोड़, गुड़गाँव

दिनांक 18 अक्तूबर 2013 को प्रातः 5.00 बजे

गुरु विरजानन्द जन्मस्थली गुरुकुल करतारपुर।

प्रस्थान प्रातः 9.00 बजे अमृतसर हेतु, जलियावाला बाग स्वर्णमन्दिर-वाघा वार्डर।

प्रस्थान-सायं 6.00 बजे वाघा वार्डर से दीनानगर

दिनांक 19 अक्तूबर एवं 20 अक्तूबर 2013 दयानन्दमठ, दीनानगर

दिनांक 20 अक्तूबर 2013 प्रस्थान सायं 4.00 बजे (गुड़गाँव हेतु)

विशेष : सीट बुक कराने से पहले कार्यक्रम ध्यान से पढ़ लें।

1. मौसम के अनुसार बिस्तर, पानी की बोतल एवं टार्च आदि साथ लायें।
2. शीघ्रातिशीघ्र अपनी सीट बुक करवालें। आधी सवारी को सीट नहीं मिलेगी। राशि जमा होने के बाद वापिस नहीं होगी। कार्यक्रम में परिवर्तन करने एवं सीट नम्बर देने का अधिकार प्रबंधक को होगा। यात्री समय का विशेष ध्यान रखें।

नोट—निवास एवं भोजन की व्यवस्था गुरुकुल में होगी, यदि कहीं ऐसा नहीं हुआ तो यात्री अपने व्यय से करेंगे।

यात्रा प्रबन्धक : **मा० सोमनाथ**

363-364, प्रतापनगर, गुड़गाँव फोन : 9811762364, 08800115646

आओ संगठित होकर आगे बढ़ें

❑ चाँदसिंह आर्य (चन्द्रदेव), महाविद्यालय, गुरुकुल झज्जर

गतांक से आगे....

11 अगस्त—सार्वदेशिक आर्य वीर दल गुरुकुल गौतम नगर बैठक नवादा में सायंकाल शिविर प्रारम्भ।

12 अगस्त—प्रात: एस.आर.स्कूल हसनपुर कार्यक्रम सायंकाल नवादा शिविर।

13 अगस्त—प्रात: यदुवंशी स्कूल कोंधरवाली में कार्यक्रम सायंकाल नवादा शिविर यज्ञ एवं यज्ञोपवीत संस्कार के साथ।

14 अगस्त—प्रात: एमडी व०मा० वि० चढ़वाना, दोपहर रा० मिडिल स्कूल व दोपहर बाद ग्रीन फिल्ड स्कूल चढ़वाना में कार्यक्रम दिया तथा सायंकाल शिविर प्रारम्भ किया।

15 अगस्त—स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में जिला कारागार झज्जर में यज्ञ-यज्ञोपवीत संस्कार एवं एक दिवसीय योगशिविर सायंकाल चढ़वाना में शिविर।

16 अगस्त—रा०व० माध्यमिक विद्यालय भिण्डावास में कार्यक्रम, सायंकाल चढ़वाका शिविर समापन यज्ञ एवं यज्ञोपवीत संस्कार के साथ।

17 अगस्त—गाजियाबाद से मैट व दिल्ली से साउण्ड सिस्टम लेकर आए।

18 अगस्त—बाढ़ड़ा में यज्ञ, कुडल मन्दिर में बैठक उपरान्त लोहारू आर्यसमाज मन्दिर में बैठक रात्रि धनासरी आर्यसमाज बैठक में विश्राम।

19 अगस्त—धनासरी यज्ञ मन्दिर में वृक्षारोपण, बेरला, झोझूंकलां, पांडवाण, माणकावास, चरखी दादरी आदि स्थानों पर संपर्क करते हुए सायंकाल भिण्डावास शिविर का समापन यज्ञ यज्ञोपवीत संस्कार के साथ।

20 अगस्त—प्रात: गुरुकुल झज्जर में श्रावणी पर्व, दोपहर विद्यार्य सभा की बैठक, सायंकाल डाबला, कासनी, खुडन में सम्पर्क।

21 अगस्त—समसपुर, चरखी दादरी, माणकावास, पैंतावास, फतेहगढ़ कितलाणा, झोझूकलां आर्यों से संपर्क अभियान।

22 अगस्त—दूधवा, दातौली, धनासरी, भाण्डवा, पंचगांव व रुदड़ौल आदि स्थानों पर सम्पर्क व आर्यसमाजों की बैठकें कीं।

23 अगस्त—झोझूकलां, दूधवा, दातौली, मंदोला, भिवानी, बौंदकलां, मानकोष, समसपुर, चरखी दादरी होते हुए अर्धरात्रि गुरुकुल झज्जर पहुँचे।

24 अगस्त—प्रात: रा०कन्या वा० मा० विद्यालय सिलानी में कार्यक्रम, दोपहर कार्यालय गुरुकुल झज्जर में शिक्षाविदों की बैठक, दोपहर बाद स्वरूपगढ़, कन्हेटी, च० दादरी, रानीला, बौन्द खुर्द आदि स्थानों पर सम्पर्क एवं बैठक आदि करके अर्धरात्रि कार्यालय झज्जर पहुँचे।

25 अगस्त—रसूलपुर, दोंगड़ा अहीर, करीरा, कोथल खुर्द, कनीना, छितरौली, धनौंदा, सेहलंग, सिहोर एवं मालड़ा आदि महेन्द्रगढ़ का संपर्क अभियान अर्धरात्रि तक चला।

26 अगस्त—महेन्द्रगढ़, सिसोठ, दोंगड़ा अहीर, होते हुए बेरी में योग-शिक्षकों का साक्षात्कार लिया फिर सभा कार्यालय रोहतक कार्यालय कार्य किया।

27 अगस्त—दोंगड़ा अहीर, सिहमा मंडलाना, खटौटी सुलतानपुर, कवरिया वास होते हुए अर्धरात्रि कार्यालय झज्जर पहुँचे।

28 अगस्त—राई जिला सोनीपत में आर्यवीर व्यायामशाला, पण्डित लेखराम पुस्तकालय एवं वैदिक छात्रावास की स्थापना कार्यक्रम करके रोहतक गाड़ी रिपेयरिंग करवाकर गुढ़ा गांव में शिविर की योजना बनाई।

29 अगस्त—अटेलीमण्डी, पृथीपुरा, बाछौद आदि स्थानों की बैठक करके झोझूकलां के कुश्ती दंगल करवाकर अर्धरात्रि कार्यालय झज्जर पहुँचे।

30 अगस्त—प्रात: महर्षि दयानन्द उच्च विद्यालय सिलानी में कार्यक्रम, दिनभर शिविर की तैयारी, सायंकाल सिलानी शिविर प्रारम्भ।

31 अगस्त—दोनों समय शिविर दिन में कार्यालय कार्य।

1 सितम्बर—प्रात: सायं दोनों समय सिलानी शिविर, दिन में आर्य वीर दल हरयाणा की प्रान्तीय बैठक फरीदाबाद में।

2 सितम्बर—दोनों समय सिलानी शिविर दिन में कार्यालय कार्य।

3 सितम्बर—प्रात: सिलानी शिविर उपरान्त रा० उ० वि० मशूदपुर में कार्यक्रम, सायंकाल सिलानी शिविर का समापन यज्ञ एवं यज्ञोपवीत संपर्क, 112 शिविरार्थियों का यज्ञोपवीत संस्कार।

4 सितम्बर—प्रात: खेड़ीजट्ट रा० व०मा० विद्यालय में कार्यक्रम, सायं-काल से शिविर प्रारम्भ।

5 सितम्बर—प्रात: राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बहादुरगढ़ में कार्यक्रम, दोपहर छुड़ानी धाम मेला, सायंकाल खेड़ीजट शिविर।

6 सितम्बर—प्रात: महाराजा अग्रसेन कॉलेज झज्जर में कार्यक्रम, सायंकाल खेड़जट्ट शिविर।

7 सितम्बर—प्रात: कनीना, दौंगड़ा अहीर जाकर सम्पर्क व बैठक की, सायंकाल खेड़ीजट शिविर का समापन यज्ञ एवं यज्ञोपवीत संस्कार के साथ सम्पन्न 36 शिविरार्थियों का यज्ञोपवीत संस्कार।

8 सितम्बर—प्रात: समसपुर, च० दादरी, कलियाणा, झोझूकलां, बेरला, जेवली, बाढ़ड़ा, भिवानी, बौंद खुर्द आदि स्थानों पर सम्पर्क अभियान पूरा करके अर्धरात्रि कार्यालय पहुँचे।

9 सितम्बर—रा०व०मा० वि० गुड्डा में कार्यक्रम, सायंकाल शिविर प्रारम्भ।

10 सितम्बर—रा०क०व०मा० विद्यालय बालन्द, दोपहर ईश्वर इंटर नेशनल स्कूल गोहाना में कार्यक्रम देकर, रिठाल एवं रोहतक होते हुए सायंकाल गुड्डा शिविर में पहुँचे।

11 सितम्बर—सी.के. मैमोरियल स्कूल झज्जर में कार्यक्रम सायंकाल गुड्डा शिविर।

12 सितम्बर—आदर्श सीनियर सै० स्कूल बौंद कलां में कार्यक्रम, उपरान्त भिवानी होते हुए महर्षि दयानन्द पोलिटेकनिक कॉलेज निमड़ी वाली कार्यक्रम करते हुए सायंकाल गुड्डा शिविर का यज्ञ-यज्ञोपवीत संस्कार कार्यक्रम करके शिविर समापन।

शेष अगले अंक में....

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज गोहानामण्डी, जिला सोनीपत	9 से 13 अक्तूबर 2013
2.	आर्यसमाज बीगोपुर, जिला महेन्द्रगढ़	12 से 13 अक्तूबर 2013
3.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र का 101वां वार्षिकोत्सव	25 से 27 अक्तूबर 2013
4.	ओम् साधना मण्डल, करनाल	16 से 17 नवम्बर 2013

—प्राचार्य अभय आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

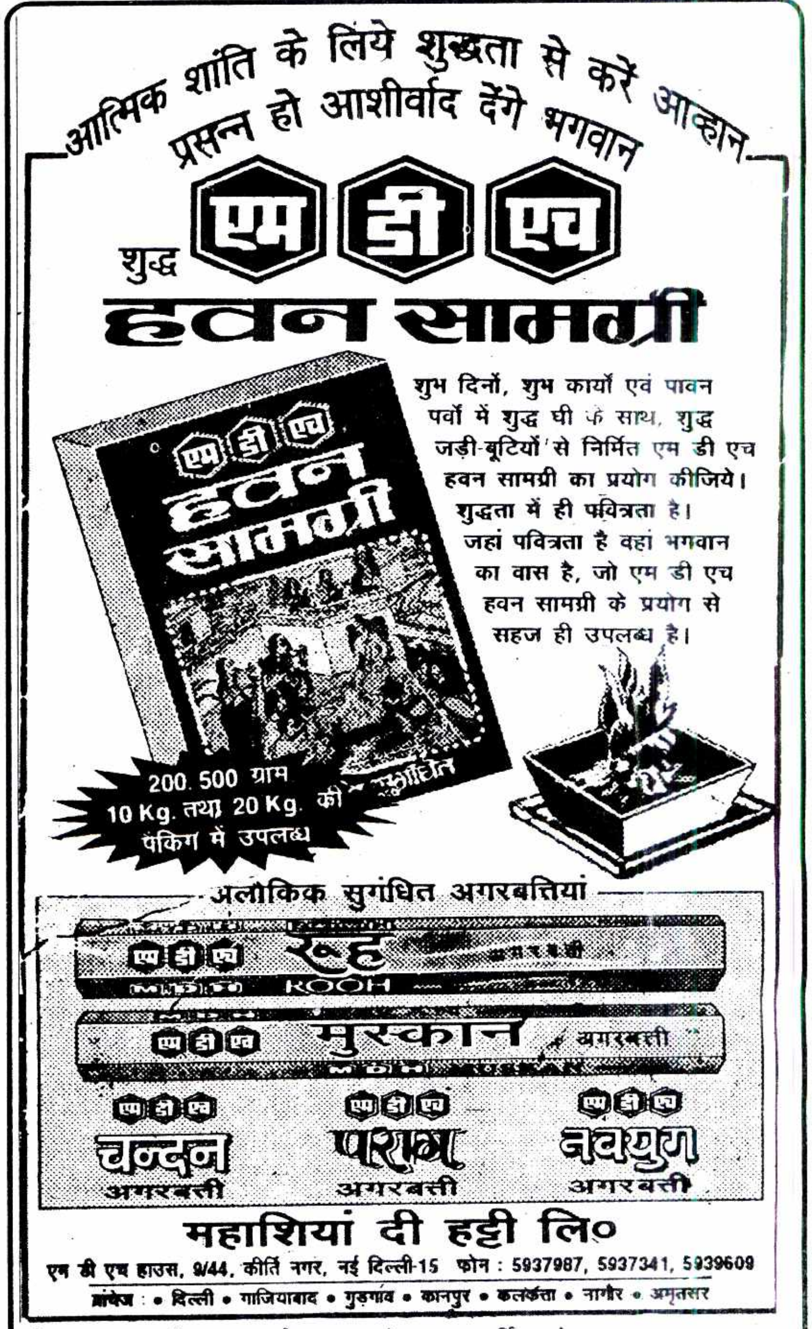

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओमप्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

www.thearyasamaj.org

आर्य-संसार

अनुकरण के चरण

मत्स्यभोजी ने ठुकराया जब मत्स्याहार

आज यह कलम क्यों चल पड़ी। यों कि मैंने अखबार में ग्राम नदरोई (अलीगढ़) का चौंकाने वाला एक समाचार पढ़ा। एक युवक ने मत्स्य-पालन के लिए गांव की पोखर का पाँच वर्ष के लिए आवंटन कराया। उसने मछलियों के लिए निश्चित चारा डालने के बजाय मृत पशुओं को पोखर में छोड़ना प्रारम्भ कर दिया। ग्रामीण तब सचेत हुए, जब पोखर से उठने वाली दुर्गन्ध ने उनका उठना-बैठना दूभर कर दिया। उन्होंने अपनी तहसील के उप-जिलाधिकारी से इसकी शिकायत की।

अर्द्धशती पूर्व ऐसी ही एक घटना तब घटित हुई थी, जब मैंने इंटर कॉलेज के शिक्षक के पद को छोड़कर उत्तर प्रदेश कृषि विभाग के राजकीय पद का दायित्व संभाला था। उस समय हमारे राज्य स्तरीय कार्यालयाध्यक्ष माननीय श्री एन.के. दास थे। वे अति दयालु एवं सहायकों के संरक्षक थे। मैंने अपने लेखन में जहाँ कहीं भी उनका उल्लेख किया है, तो उनके नाम से पहले देवता-स्वरूप विशेषण अवश्य अंकित किया है। वे वास्तव में देवता थे।

उनका जन्म उत्कल राज्य में हुआ था। बंगाल एवं उत्कल आदि प्रदेशों में मत्स्याहार का आम प्रचलन है। एक बार वे महोदय क्षेत्रीय भ्रमण पर थे। उन्होंने नदी के किनारे एक मानव के शव को चिपटी हुई मछलियों द्वारा खाते देख लिया। उनका मन घृणा से भर गया। उन्हें समझाते देर नहीं लगी कि मत्स्यभोजी मछली के माध्यम से मानव-पशुओं की सड़ी गली मृत देह का मांस ही खा जाते हैं। और उन्होंने उस दिन मछली न खाने की प्रतिज्ञा की। उसका सपरिवार आजीवन निर्वाह किया।

बाजार से कोई क्या कुछ लाता और खाता है। जब उसकी अन्तर्निहित वास्तविकता को देखता है तो उसकी आँखें खुली की खुली रह जाती हैं।

—प्रस्तुति : देवनारायण भारद्वाज
'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़-202001

महर्षि दयानन्द सत्संग भवन का शिलान्यास

आर्यनगर जवाहरनगर पलवल के विशाल प्रांगण में 25.8.13 को सायंकाल 7.00 बजे महर्षि दयानन्द सत्संग भवन का शिलान्यास श्री लक्ष्मण देव छाबड़ा महासचिव, मानसरोवर गार्डन दिल्ली आर्यसमाज एवं स्वामी जगदीश्वरानन्द हसनपुर के करकमलों द्वारा विधिवत् सम्पन्न हुआ।

छाबड़ा परिवार ने एक लाख ग्यारह हजार का सात्विक दान देकर इस शुभ कार्य में अपना योगदान भी दिया। शिलान्यास का कार्य में अपना योगदान भी दिया। शिलान्यास का कार्य श्री देशराज शुक्ल ने क्षेत्र के गणमान्य आर्यों की उपस्थिति में यज्ञ द्वारा कराया। मुख्य यजमान प्रधान जयप्रकाश आर्य सपत्नीक थे। अध्यक्षता डॉ० धर्मप्रकाश आर्य पूर्व डायरेक्टर जनरल स्वास्थ्य विभाग ने की।

सर्वश्री डालचन्द शास्त्री, ठाकुर लाल, महाशय भजन लाल सरपंच, महाशय राधेलाल आर्य, श्री तुलाराम शर्मा, श्री नारायणसिंह आर्य, बी.के. आर्य, दौलतराम गुप्ता, यशपाल मंगला, संदीप गोयल, दिनेश आर्य, सतीश आर्य, विजय आर्य, जगदीश झाम्ब, रवि आर्य, सुरेन्द्र आर्य, मुखी घनश्यामदास, सत्या चौ० प्रधाना प्रेम कवात्रा प्रधाना, सुदेश आर्या आदि उपस्थित थे। **—आनन्दप्रकाश आय**

शिविर सूचना

सरल आध्यात्मिक शिविर का आयोजन

दिनांक 28 अक्तूबर से 1 नवम्बर, 2013 तक

स्थान : गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत (रोहतक)

अध्यक्षता : **स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक** (रोजड़ वाले)

आशीर्वचन : **पूज्यपाद आचार्य बलदेव जी**

शिविर में भाग लेने वाले साधक को पंजीकरण करवाना अनिवार्य है तथा शिविर शुल्क 500/- रुपये देय होगा। शिविर में भाग लेने वाले महानुभाव 27.10.13 की सायं तक पहुँचें।

निवेदक : प्रधान आर्यसमाज सैक्टर-1, रोहतक

सम्पर्क सूत्र : 9355674547, 9466008120, 9215676662

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती निर्वाण शताब्दी समारोह

आर्यसमाज नई मण्डी, मुजफ्फर नगर में तर्क-शिरोमणि महान् शास्त्रार्थ महारथी एवं अनेक गुरुकुलों के संस्थापक स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती का निर्वाण शताब्दी समारोह धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। प्रातः ब्रह्मयज्ञ व देवयज्ञ विदुषी बहन प्रियंका आर्य के ब्रह्मत्व में हुआ। यज्ञ के यजमान वीरेन्द्रसिंह आर्य सपत्नीक रहे। स्वामी योगानन्द सरस्वती ने अपने उद्घाटन व्याख्यान में बताया कि स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती का जन्म माघ कृष्ण दशमी सम्वत् 1918 वि० को पंजाब प्रान्त जिला लुधियाना के ग्राम जगरावाँ में पण्डित रामप्रताप शर्मा के यहाँ हुआ था। माता-पिता ने उनका नाम कृपाराम रखा था। बाद में संन्यास ग्रहण कर वे दर्शनानन्द नाम से विख्यात हुए। इ० करणसिंह जी ने बताया कि स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती की शिष्य परम्परा वैसे तो काफी लम्बी है परन्तु उनके शिष्य आकाश में तीन कान्तिमान नक्षत्र-1. पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय, उन्हीं के व्याख्यान सुनकर दर्शन विषय के विश्वप्रसिद्ध विद्वान् बन गये, 2. महान् शास्त्रार्थ महारथी पं० रामचन्द्र देहलवी आर्य जगत् को उन्हीं की देन थे, 3. आचार्य उदयवीर शास्त्री आधुनिक काल के ऐसे एकमेव विश्वप्रसिद्ध दार्शनिक हैं जिनके दर्शनों का अनेक बार प्रकाशन हुआ। स्वामी आत्मानन्द सरस्वती व कुंवर सुखपाल आर्य प्रभाकर तथा चन्द्रसैन मलिक जी ने भजन प्रस्तुत किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री कस्तूर सिंह स्नेही जी ने बताया कि स्वामी दर्शनानन्द जी ने ह मारे जनपद में ग्राम बिरालसी व ग्राम बनत में भी दो गुरुकुलों की स्थापना की थी तथा सन् 1905 ईस्वी में वे नगर के शहर आर्यसमाज में ठहरे थे। कार्यक्रम का संचालन करते हुए आर.पी. शर्मा ने कहा कि विधर्मियों-विरोधियों को झकझोर कर वैदिक सिद्धान्तों का लोहा मनवाने वाले महान् दार्शनिक स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती के पास आर्यजगत् में न कोई पद था न ही वे कोई नेता थे, परन्तु उनका व्यक्तित्व व कर्तृत्व ऐसा अनुपम था कि वे इतिहास में अमर हो गये और आज हम और आप उनकी निर्वाण शताब्दी मनाकर कृतकृत्य हो रहे हैं।

—आर.पी. शर्मा, मंत्री आर्यसमाज
नई मण्डी, मुजफ्फरनगर

आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत का निर्वाचन

संरक्षक-श्री विश्वनाथ कोहली, प्रधान-श्री रणधीरसिंह ढुल्ल, उपप्रधान-श्री प्रीतम हसीजा, महामन्त्री-श्री सुदर्शन आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री अशोक आर्य, वेदप्रचार अधिष्ठाता-सुधांशु शास्त्री, आर्यवीर दल अधिष्ठाता-वेदप्रकाश आर्य, प्रचारमन्त्री एवं मीडिया प्रभारी-श्री कपिलदेव दहिया, लेखापरीक्षक-श्री अशोक गोयल, मुख्य सलाहकार-श्री ईश्वर दयाल शर्मा।

—सुदर्शन आर्य, महामंत्री

ईश्वर कभी अपने नियमों का.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

करवा रहे हैं। अक्सर मैंने देखा है कि लोगों के घरों में भगवान् की नहीं गुरुओं की पूजा हो रही है। कईयों की तो जिन्दों की और बहुतों की मरने के उपरान्त भी। भगवान् को तो भुला दिया लोगों ने, इन पाखण्डियों की शिक्षा को मानकर। वेद भगवान् के वचन हैं। वेद कहता है—सत्य ही धर्म है और असत्य अधर्म है। मनुष्य सत्य और असत्य के आधार पर ही शुभ और अशुभ कर्म करता है।

परमपिता परमात्मा ने मनुष्य को कर्म करने में स्वतन्त्र और उसका फल भोगने में परतन्त्र बनाया है। मनुष्य कर्म करता है तो परमात्मा अच्छा बुरा करने में उसे रोकता नहीं, क्योंकि वह परमात्मा का नियम है और वह अपने नियम का उल्लंघन कभी नहीं करता। परन्तु उसको अच्छे-बुरे का उसकी आत्मा में अहसास अवश्य करवाता है। जो आत्मा को मारकर बुरा कर्म कर बैठते हैं उनका यथोचित फल परमात्मा देता है। यही परमात्मा का न्याय है। यदि परमात्मा पापियों के पाप क्षमा करने लग जाये तो पापी सर्वनाश कर देंगे और धर्मात्माओं को मार डालेंगे। इससे तो अपराध बढ़ जाएगा।

अब राजा द्वारा दोषियों को कड़ा दण्ड नहीं दिया जाता, इस कारण से तो पाप कार्य बढ़ रहे हैं। राजा दे या न दे परन्तु परमात्मा उन्हें सजा अवश्य देता है। धन का लालच देकर राजा से बच सकता है परमात्मा से नहीं।

www.thearyasamaj.org

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥

(ऋ० मं० 10/सू० 121/मं० 10)

पदार्थ—हे (प्रजापते) सब प्रजा के स्वामी रक्षक परमात्मा! (त्वत्) आपसे (अन्यः) भिन्न दूसरा कोई पदार्थ (ता) उन (एतानि) इन (विश्वा) सब (जातानि परि बभूव) उत्पन्न हुए जड़ चेतनादिकों को नहीं तिरस्कार करता है अर्थात् आप सर्वोपरि हैं या इन सब पर बलवान् हैं या इन सब उत्पन्न हुए जड़-चेतनादि में व्याप्त हैं। अतः (यत्कामाः) जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले होकर (वयम्) हम लोग (ते) आपका (जुहुमः) आश्रय लेवें या आपकी प्रशंसा करें या उपासना करें (तत्) वह-वह कामना के योग्य वस्तु (नः) हमको (अस्तु) आपकी कृपा से प्राप्त होवे जिससे (वयम्) हम लोग (रयीणाम्) विद्या सुवर्णादि धनों के (पतयः) रक्षक स्वामी (स्याम) होवें।

(सं.वि.-ऋ.दया.कृत यजुर्वेदभाष्य)

भावार्थ—(1) जो परमेश्वर से उत्तम, बड़ा, परमैश्वर्ययुक्त, सर्वशक्तिमान् पदार्थ कोई भी नहीं है तो उसके तुल्य भी कोई नहीं। जो सब का आत्मा, सबका रचने वाला, समस्त ऐश्वर्य का दाता ईश्वर है उसी की भक्ति विशेष और अपने पुरुषार्थ से इस लोक के ऐश्वर्य और योगाभ्यास के सेवन से परलोक के सामर्थ्य को हम लोग प्राप्त हों। (ऋ.दया.कृत यजुर्वेदभाष्य अ. 23/मं. 65)

भावार्थ—(2) हे मनुष्यो! जो सब जगत् में व्याप्त है, सबके प्रति माता-पिता के समान वर्त्तमान है उस जगदीश्वर की ही उपासना करो। इस प्रकार अनुष्ठान से तुम्हारी सब कामनायें अवश्य सिद्ध होंगी।

(ऋ.दया.कृत यजुर्वेदभाष्य अ. 10/मं. 20)

संकलन व संपादन : **स्वामी ध्रुवदेव जी परिव्राजक (उपाध्याय)**
दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन रोजड़, पत्रा.-सागपुर, जिला साबरकांठा
गुजरात-383307 फोन : 02770-287418, 287518

मासिक सत्संग सम्पन्न

आर्यसमाज प्रेमनगर हैफेड रोड रोहतक में मासिक सत्संग का आयोजन दिनांक 29 सितम्बर 2013 रविवार को किया गया। यज्ञ में सैकड़ों स्त्री-पुरुषों व युवाओं ने आहुति डालकर वैदिक संस्कृति अपनाने का संकल्प लिया। गायक श्री सुशील आर्य सतीश व नकुल जी ने आह्लादिक करने वाले मधुर गीतों द्वारा यज्ञ महिमा व भगवद् भक्ति के भाव जनसमुदाय में भरे। आचार्य हरिप्रसाद जी (दिल्ली) ने सांस्कृतिक प्रदूषण से अपनी संतानों को बचाने के लिए अभिभावकों को गम्भीर संदेश व चेतावनी दी। सत्संग के बाद आर्य प्रचारक श्री सुखदेव जी शास्त्री गाँव आसन के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त की गई। सत्संग में बहन निर्मल बल्हारा, बहन कृष्णा दांगी, श्री शमशेर नेहरा, मा० आनन्द स्वरूप, महावीर शास्त्री, पत्रकार जसवीर मलिक, पूर्व प्राचार्य श्री राजेन्द्र सिंह हुड्डा विशेष रूप से उपस्थित थे। सत्संग का आयोजन आर्य पारिवारिक सत्संग सभा रोहतक के सहयोग से आयोजित किया गया।

—महावीर शास्त्री, प्रचारमन्त्री

वार्षिकोत्सव का आयोजन

आर्यसमाज गोकर्ण मार्ग रूपनगर, रोहतक के वार्षिकोत्सव दिनांक 13 से 20 अक्तूबर 2013 पर ऋग्वेद पारायण यज्ञ, भजन तथा वेदोपदेश का आयोजन किया जा रहा है जिसमें आचार्य उषर्बुध जी वैदिक प्रवक्ता जयपुर यज्ञ के ब्रह्मा होंगे तथा श्री प्रतापसिंह जी आर्य, सहारनपुर एवं डॉ० कैलाश कर्मठ जी कोलकाता के भजन होंगे। इसके साथ ही वैदिक संस्कृति के मर्मज्ञ विद्वान् महामहोपाध्याय आचार्य वेदप्रकाश जी शास्त्री, हरिद्वार को सम्मानित किया जाएगा। सभी धर्मप्रेमी सज्जनों, माताओं, बहनों से इस कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में पहुंचने की विनम्र प्रार्थना है।

यजमान बनने के इच्छुक संपर्क करें-
निवेदक :- **946674992, 9466749993, 9467713527**
सभी अधिकारी एवं सदस्यगण, आर्यसमाज गोकर्ण मार्ग, रूपनगर, रोहतक

पौराणिक मित्रों से निवेदन

तुम महापुरुषों के गौरव को मिटाना छोड़ दो।
झूठे आरोपों को इन पर अब लगाना छोड़ दो॥
श्रीराम जी, श्रीकृष्ण जी तो ईश्वर के भगत थे।
ईश्वर अवतार अब इनको बताना छोड़ दो॥
शिक्षा इनकी ग्रहण कर लो, इनके गुण धारण करो।
स्वांग भर महापुरुषों के, अब तो नचाना छोड़ दो॥
रासलीला में न इनसे भीख मंगवाओ कभी।
ऐसा अब अपमान तो करना कराना छोड़ दो॥
धर्मपत्नी कृष्ण जी की, थी केवल एक रुक्मिणी।
काहन राधा गोपियों का, अब बताना छोड़ दो॥
है यदि कुछ भी तुम्हें, इन्सानियत का पास गर।
पत्थरों की मूर्तियों पर, सिर झुकाना छोड़ दो॥
मन के मन्दिर में प्रभु की ज्योति के दर्शन करो।
असली मन्दिर है यही, नकली ठिकाना छोड़ दो॥
काली भैरों पर करो ना जीव हत्या की कभी।
बकरे, भैंसे देवियों पर, अब चढ़ाना छोड़ दो॥
जीवित माता-पिता की सेवा करो खिदमत करो।
मुर्दे कुछ खाते नहीं, भोजन पहुँचाना छोड़ दो॥
वक्त है अब भी संभल जाओ तुम प्यारे भाइयो।
वेदमार्ग पर चलो, मजहबी फँसना छोड़ दो॥
धर्म शास्त्रों को पढ़ो, सत्यज्ञान को हासिल करो।
पुराणों की अश्लील गाथायें, सुनाना छोड़ दो॥
बुद्धि दी परमात्मा ने, '**सेवक**' इससे काम लो।
सीधे मार्ग पर चलो, अब उल्टा जाना छोड़ दो॥
सत्य धर्म धारण करो, झूठा तराना छोड़ दो॥

भेंटकर्त्ता : **सूबेदार करतारसिंह आर्य-सेवक**,
आर्यसमाज गोहाना मण्डी, जिला सोनीपत

शान्तियज्ञ पर वेदोपदेश

दिनांक 14 सितम्बर को फरमाणा जिला सोनीपत में शान्तियज्ञ पर वेद उपदेश हुआ। आर्यजगत् के विद्वान् आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में यज्ञ हुआ। श्री यशपाल शास्त्री, श्री यशवीर, श्री पुष्पेन्द्र व श्री सुरेन्द्र जी द्वारा मन्त्र पाठ किया गया। यज्ञ में अनेक स्त्री-पुरुष व युवाओं ने भाग लिया। आचार्य जी ने युवा के दिवंगत होने पर गमगीन सभा में वेद के उपदेश '**प्र त्वा युनक्ति**' पर बोलते हुए कहा कि जीवात्मा इस शरीर के द्वारा शुभकर्म करने आता है। वेद में इसे अतिथि भी कहा है और प्रभु हमें '**भस्मान्तं शरीरम्**' भी कहकर यही उपदेश दे रहे हैं कि जीवन बहुत थोड़ा है इसी समय में शुभ ही करें।

आचार्य जी के आत्मबोध से एक विदुषी ने यजमान बनी नारी को ढाढस बंधाते हुए कहा कि मन के संकल्पों को हंसकर पूर्ण करने वाले आर्य ही होते हैं। आप भी उनकी पुत्री हो। वेदोपदेश का सभा में अच्छा प्रभाव हुआ।

—मनोज आर्य Msc. पतञ्जलि योगाश्रम, भाऊ आर्यपुर, रोहतक

अपील

जिस प्रकार शुद्ध घी अग्नि का सम्पर्क पाकर वातावरण को शुद्ध तथा सुसंगठित करता है ठीक उसी प्रकार '**आर्य प्रतिनिधि**' साप्ताहिक द्वारा पाखण्ड, अंधविश्वास एवं आध्यात्मिक अज्ञानता को दूर करने हेतु किए जा रहे परोपकारी ज्ञानयज्ञ की ज्ञानाग्नि में तन-मन-धन से सहयोग देकर आप भी पुण्य एवं यश के भागी बनें। ध्यान दें कि आपके आस-पास आपके स्नेहीजन कौन-कौन से ऐसे महानुभाव हैं जो विचारशील, स्वाध्यायप्रेमी तो हैं किन्तु आर्य वैचारिक क्रान्ति अथवा वैदिकधर्म एवं सिद्धान्तों से दूर हैं ऐसे महानुभावों को कम से कम एक वर्ष के लिए '**आर्य प्रतिनिधि**' साप्ताहिक से जोड़ने का छोटा-सा किन्तु अहम् प्रयास आप भी कर सकते हैं।

—सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।